thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त केसरी

विश्व भर में भारतीय संस्कृति का उद्घोषक पाक्षिक

वार्षिक शुल्क : 100/-
आजीवन : 1100/-
(विदेश में) 5 वर्ष के 35 डॉलर

आर.एन.आई.सं.
UP HIN/2002/7589
पोस्टल रजि. सं.
U.P./MBD-64/2013-16
दयानन्दाब्द १९०,
सृष्टि सं.-१९६०८५३११५

वर्ष-13 / अंक-17 / पौष शु. 11 से माघ कृ. 10 सं. 2071 वि. / 1 से 15 जनवरी 2015 / अमरोहा (उ.प्र.) / पृ.- 8 / प्रति- 5/-

अटल और मालवीय को 'भारत रत्न'

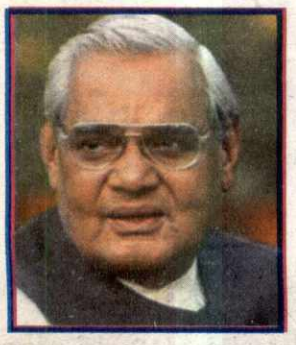

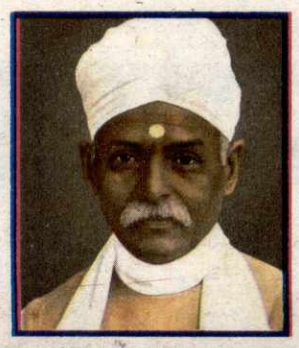

नई दिल्ली। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और स्वतंत्रता सेनानी व बनारस हिंदू विवि के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय को देश के सर्वश्रेष्ठ नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा जाएगा। केंद्र सरकार ने बुधवार को इसकी घोषणा वाजपेयी जी के 90वें जन्मदिवस से ठीक एक दिन पहले की है। संयोगवश इसी दिन शिक्षाविद मदन मोहन मालवीय जी की भी 153वीं जन्मतिथि है। केंद्र की ओर से इन दिग्गजों को इस साल भारत रत्न देने का प्रस्ताव भेजा गया था। इसके अलावा प्रधानमंत्री ने खुद इसकी सिफारिश की थी। इस पर राष्ट्रपति ने भी मुहर लगा दी। सरकार इस दिन को पहले ही सुशासन दिवस के रूप में मनाने की घोषणा कर चुकी है।

राष्ट्रपति भवन की ओर से जारी विज्ञप्ति में लिखा गया है, 'राष्ट्रपति को यह घोषणा करते हुए बेहद खुशी हो रही है कि पंडित मदन मोहन मालवीय (मरणोपरांत) और अटल बिहारी वाजपेयी को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा।' देश का सर्वोच्च सम्मान हासिल करने वाले मालवीय 44वीं और वाजपेयी 45वीं हस्ती होंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के वार्षिक साधारण अधिवेशन में मंच का दृश्य- केसरी।

धर्मपाल आर्य बने दिल्ली सभा के प्रधान

दिल्ली। आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रिवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन एवं निर्वाचन आर्य समाज मंदिर हनुमान रोड, नई दिल्ली में सुप्रसिद्ध धर्मनिष्ट उधोगपति महाशय धर्मपाल (एम डी. एच) के सानिध्य तथा राज सिंह आर्य की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमे वर्ष २०१४ –२०१७ के लिए दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के ४०० प्रतिनिधियों के द्वारा धर्मपाल आर्य को सर्वसमिति से "प्रधान" चुन लिया गया।

निर्वाचन की कार्यवाही डॉ. सुरेन्द्र कुमार, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की देखरेख में संपन्न हुई।

सभा की कार्यकारिणी के अन्य सदस्य चुनने का अधिकार भी प्रधान जी को सौप दिया।

सिंगापुर और बैंकॉक में अन्तर-राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

महिला सशक्तिकरण पर बल

सिंगापुर तथा बैंकॉक। सिंगापुर में 1 व २ नवंबर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भारत व् सिंगापुर के संयुक्त तत्वावधान में सिंगापुर आर्य समाज में अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मलेन का आयोजन किया गया। २ दिन के इस महासम्मेलन में भारत, मॉरिशस, लंदन, कनाडा, यूनाइटेड स्टेट्स व् सिंगापुर के, कई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। वैदिक आर्य संस्कृति को दक्षिण पूर्व एशिया में विस्तार की दृष्टि से सभी विद्वानों ने विचार रखे। योग मैडिटेशन के अभ्यास वर्ग का आयोजन भी किया गया। २ नवंबर को महिला सम्मलेन में डॉ. विजय प्रभा ने महिलाओं के सशक्तिकरण पर प्रकाश डाला।

८–९ नवंबर बैंकाक (थाईलैंड) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा भारत व् बैंकाक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित २ दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मलेन में भारत मॉरिशस, कनाडा, अमेरिका, लंदन, थाईलैंड के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ९ नवंबर को अंतर्राष्ट्रीय आर्य महिला सम्मलेन में महिलाओं का आह्वान करते हुए डॉ. प्रभा ने कहा कि आज सभी महिलाएं 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि वैदिक दर्शन में महिलाओं को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। माता मदालसा, गार्गी अनुसूया, सीता व सावित्री जैसी महान महिलाओं से हमारा इतिहास सुशोभित है। संविधान में महिलाओं के सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया गया है। नारी जागरण तथा सशक्तिकरण के आह्वान के साथ सम्मेलन सम्पन्न हुआ।

गरीबों, असहायों व निर्बलों में बांटे कंबल

अरविन्द पाण्डेय
कोटा

खुले आसमान के नीचे जमीन की चादर पर गहरी नींद सोये व्यक्ति को कम्बल ओढ़ाने वाले थे आर्य समाजी लोग, जो जिला आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से फुटपाथ पर ठंड से ठिठुरते गरीबों को कम्बल ओढ़ा रहे थे। आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्ढा की अगुवाई में कैलाश बाहेती प्रधान आर्य समाज रामपुरा, अरविंद पाण्डेय, प्रधान गायत्री विहार, रघुराज सिंह प्रधान तलवण्डी, श्रीचंद गुप्ता उपप्रधान जिला सभा, पंजाबी समिति के महामंत्री दर्शन पिपलानी, मुकेश चड्ढा विज्ञान नगर का दल कम्बल लेकर पहुंचा।

यह दृश्य था रात 11 बजे का और जगह थी छावनी से कोटडी चौराहा व गुमानपुरा आने वाली सड़क के बीच बना फुटपाथ जहां अनेकों बेघर एवं निर्धन लोग काम–धंधे से लौटकर रात्रि विश्राम करते हैं। इनमें अधिकांश दिहाड़ी पर काम करने वाले मजदूर हैं, जिनकी कमाई इतनी नहीं कि वे हाड कंपा देने वाली सर्दी से बचने हेतु गर्म कम्बल खरीद सकें। आर्य समाज ,कोटा ने बेसहारा लोगों को कंबल वितरण करने का फैसला किया और संस्था के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा की टीम ने इस पवित्र काम को करने के लिए शहर के ऐसे इलाके चुने जहां बेघर लोग और गरीब लोग फुटपाथ पर कच्ची जमीन पर रात व्यतीत करते हैं, लेकिन उनके पास ओढ़ने को कपड़ा तक नहीं होता। नयापुरा जाते हुए एक जगह दो वृद्ध महिलाएं तीन नन्हें बच्चों के साथ कागजों का अलाव लगा कर खुद और अपने बच्चों को सर्दी से बचाने का प्रयास कर रही थीं। प्रत्यक्षदर्शी राहगीरों ने आर्य समाज की प्रशंसा की।

आर्य जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा गरीबों में कम्बल बांटते हुए साथ में हैं जेएस दुबे व अन्य- केसरी।

thearyasamaj.org

आर्यसमाज, अमरोहा के वार्षिक उत्सव में मंच पर विराजमान विद्वज्जन तथा उपस्थित श्रद्धालु आर्यजन - केसरी।

धूमधाम से मना आर्यसमाज का ११३वां वार्षिकोत्सव

- शोभायात्रा में गुरुकुल चोटीपुरा की ब्रह्मचारिणियों ने छोड़ी अद्भुत छाप
- आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर ग्यारह कुंडीय यज्ञ

अमरोहा। आर्य समाज का 113 वां वार्षिक उत्सव मनाया जा रहा है। इस अवसर पर तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। ग्यारह कुंडलीय यज्ञ से कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ हुआ। यज्ञ के उपरांत भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। आर्य समाज ने भजनों के माध्यम से प्रवचन प्रस्तुत किए। रविवार को ग्यारह कुडीय यज्ञ हुआ। दिल्ली से आए आर्य जगत डा. देव शर्मा यज्ञ के ब्रह्म रहे। नगर के गणमान्य व्यक्ति और महिलाएं यज्ञ में यजमान बने। चांदपुर से आए राकेश कुमार आर्य ने यज्ञ महिमा गीत प्रस्तुत किए। कलकत्ता से आए डा. कैलास कर्मठ ने भजन प्रस्तुत किए। डेढ़ बजे भाजपा सांसद कंवर सिंह तंवर ने ओइम ध्वज का ध्वजारोहण किया। इसके उपरांत आर्य समाज मंदिर से भव्य नगर शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में आर्य समाज, स्त्री आर्य समाज, श्रीमद् दयानंद आर्य कन्या महाविद्यालय, शांति देवी स्मारक प्रसार समिति, फूल सिंह इंटर कालेज जब्दी, भारत माता विद्या मंदिर जूनियर हाईस्कूल आदि के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। गुरू कुल महाविद्यालय पूठ के प्राचार्य स्वामी धर्मेश्वरानंद ने ब्रहत्व में ग्यारह कंडीय यज्ञ किया। राष्ट्र की रक्षा का आहवान किया। कहा कि आज की युवा शक्ति को वैदिक विचार धारा से जोड़ने की आवश्यकता है। वैदिक संस्कृति ही सर्वभौम संस्कृति है। मानव मात्र के कल्याण की भावना पैदा करती है। प्राचीन विचार धाराएं समाप्त होने से ही राष्ट्र में अनैतिकता पैदा हो गई है।

डॉ. बीना रुस्तगी ने कहा कि श्रेष्ठ विचारधारा, संयमित जीवन, जो मां को परमात्मा की ओर से मिला है, जिस कारण मां त्यागमयी, प्रेममयी, स्नेहमयी है। डॉ. कमलेश सिंह ने कहा कि माता वह निर्माता है और यदि सारा समाज मिलकर मां को अच्छा वातावरण दे, तो वह ऐसे बच्चों का निर्माण करके समाज को देगी, जो पूरे देश को चमत्कृत कर देंगे। हमारी सारी व्यवस्थाएं ठीक हो जाएंगी। इससे पूर्व एकादश कुंडीय यज्ञ गुरूकुल महाविद्यालय पूठ के प्राचार्य स्वामी धर्मेश्वरानंद के ब्रह्मत्व में प्रारंभ हुआ। सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक सुलभा शास्त्री ने सुंदर भजन प्रस्तुत किए। कलकत्ता से आए नाड़ी रोग विशेषज्ञ डा.कैलाश कर्मठ ने १५० रोगियों को निशुल्क परामर्श दिया और ओजस्वी वाणी से भजन प्रस्तुत करके मंत्रमुग्ध कर दिया। गुरुकुल महाविद्यालय पूठ के ब्रह्मचारी प्रमोद आर्य ने विभिन्न प्रकार के योगासन करके सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इस अवसर पर आर्य समाज की शोभायात्रा में प्रशंसनीय भूमिका निभाने वाले नवयुवकों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रधान हेतराम सागर, मंत्री राजनाथ गोयल विनय प्रकाश आर्य, श्रीराम गुप्ता, आर्य समाज प्रधान हेतराम सागर, संजीव गुप्ता, सुरेश विरमानी, अभय आर्य, दिनेश चंद रस्तोगी, रवि प्रकाश रस्तोगी, कृष्णा चंद गोयल, विश्व देव, नरेंद कांत गर्ग, हरिओम अग्रवाल, शुभम रस्तोगी, रोहित गोयल, ऊषा बंसल, सलिल नाथ गोयल, डा. जगत सिंह, मनोहर लाल आर्य, सुप्रिया खुराना, प्रिया गुप्ता, चंद्रकांता, सोनिया, शिवानी, प्रज्ञा अर्चना, शीला रस्तोगी, अर्चना गुप्ता, श्रीराम गुप्ता, देवेंद्र सिंह, अंकित कुमार रस्तोगी, दिनेश चंद रस्तोगी, तेजपाल सिंह आदि मौजूद रहे।

अलका यादव को पीएच.डी.

अमरोहा। महात्मा ज्योतिबाफुले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली ने राजनीति विज्ञान विषय में अलका यादव को पीएच.डी. उपाधि से विभूषित किया है। श्रीमती यादव ने अपना शोध प्रबन्ध '1857 की क्रान्ति का राष्ट्रीय आन्दोलन पर प्रभाव (रुहेलखण्ड परिक्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में एक अध्ययन)' विषय पर डॉ. हरस्वरूप वैश्य के निर्देशन में जे.एस. हिन्दू (पीजी) कॉलेज, अमरोहा केन्द्र से पूर्ण किया।

ऋषि जन्मभूमि टंकारा यात्रा-2015

आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कॉलोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा के तत्वावधान में

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव, टंकारा (गुजरात) यात्रा- १२ फरवरी से १८ फरवरी २०१५

प्रस्थान : 12 फरवरी 2015 को प्रात: 7 बजे मुरादाबाद से आला हज़रत एक्सप्रेस 4311 अप। 11 फरवरी 2015 विश्राम एवं रात्रि भोजन, आर्य समाज मंदिर, गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद, दूरभाष- 09410065832 **वापसी** : 17 फरवरी 2015 आला हज़रत से, **आगमन** : मुरादाबाद सायं 6 बजे, 18 फरवरी 2015

: परिभ्रमण कार्यक्रम :

अहमदाबाद-सावरमती आश्रम, अक्षरधाम मन्दिर-पोरबन्दर, द्वारिका, भेंट द्वारिका व सोमनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थल

प्रस्थान से लेकर आगमन तक रेल-बस आरक्षण, भोजन, जलपान, आवास-निवास, परिभ्रमण की समुचित व्यवस्था उप सभा द्वारा होगी। **आप 3000/- रूपये का ड्राफ्ट अथवा चैक आर्यावर्त केसरी, अमरोहा के नाम से खाते में भिजवा दें या कार्यालय अमरोहा को नकद हस्तगत कराकर रसीद प्राप्त कर लें। आप अपनी सहयोग राशि 'आर्यावर्त केसरी' के नाम से भारतीय स्टेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या- 30404724002 अथवा सिंडीकेट बैंक की किसी भी शाखा में बचत खाता संख्या- 88222200014649 में सीधे जमा करा सकते हैं, जिसकी सूचना अवश्य दें ताकि आपको रसीद भेजी जा सके। आपकी धनराशि 3000/- 05 जनवरी 2015 तक प्राप्त हो जानी चाहिए।** समुचित व्यवस्था में आपका सहयोग प्रार्थनीय।

यात्रियों को आवश्यक निर्देश :- ● गाड़ी के निर्धारित समय से आधा घंटा पूर्व सम्बन्धित रेलवे स्टेशन पर पहुंचना। ● यात्रा में कम से कम सामान साथ रखें, ● ओढ़ने, बिछाने की चादर, टॉर्च, नोट बुक, पैन्सिल, मतदाता परिचय-पत्र, दैनिक आवश्यकता की वस्तुएं तौलिया, शेविंग का सामान, तेल आदि। ● बहुमूल्य सामान साथ न रखें। ● अपनी औषधि साथ रखें। ● आवास या निकट के दूरभाष नम्बर कोड सहित अपना पूरा पता, आयु सहित भेजें। ● आप कब और कहां किस प्रकार पहुंच रहे हैं, सूचित करें। ● परिभ्रमण काल में आवास आर्यसमाज मन्दिर, पोरबन्दर, अहमदाबाद में रहेगा। ● कार्यक्रम संयोजक को व्यवस्था परिवर्तन का अधिकार है।

आओ! ऋषि जन्मभूमि की यात्रा का कार्यक्रम बनाएं...

□श्रीराम गुप्ता- संरक्षक, □हरिश्चन्द्र आर्य- अधिष्ठाता (05922-263412), □डॉ. अशोक कुमार आर्य- प्रधान सम्पादक (09412139333), □डॉ. यतीन्द्र विद्यालंकार- समाचार सम्पादक (09412634672), □ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य- कोष प्रमुख (09412493724), □नरेन्द्र कांत गर्ग- संयोजक (09837809405)।

thearyasamaj.org

कैमरे की नज़र में आंचलिक गतिविधियां...

फरीदाबाद (हरियाणा)। **वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न**- आर्ष योग संस्थान न्यास, बघैली नीमका रोड, सैक्टर ७६, फरीदाबाद का ६ वां वार्षिकोत्सव २३ नवम्बर को सुसम्पन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में एम.डी.एच के महाशय धर्मपाल गुलाटी विशेष रूप से उपस्थित थे। साथ ही, आर्यजगत के अनेक सन्यासी तथा विद्वानों का मार्गदर्शन मिला।

कालीकट (केरल)। **वेद सम्मेलन आयोजित**- सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य एम.आर. राजेश के नेतृत्व में केरल के कालीकट, अतोली में वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। जीवन में विजय पाने के लिए वेद के ज्ञान की आवश्यकता बताते हुए पारिवारिक, आर्थिक, एवं आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा हुई। आचार्य राजेश ने कहा कि अंग्रेजों ने वेद की गलत व्याख्या करवाके वैदिक संस्कृति के नाश करने की कोशिश की। हजारों की संख्या में उपस्थित लोगों को यह पूरे तीन दिनों का एक नया अनुभव था।

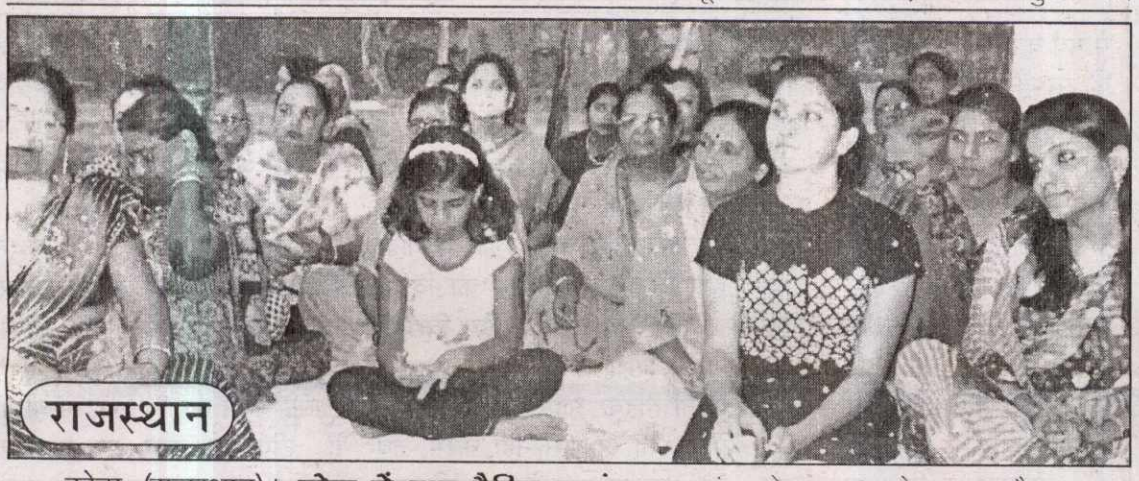

कोटा (राजस्थान)। **कोटा में हुआ वैदिक सत्संग**- सत्संग के माध्यम से सत्य और असत्य की पहचान होती है तथा कर्तव्य व अकर्तव्य का विवेक भी सत्संग से ही संभव है। सत्संग का अर्थ है अच्छे व सत्य मार्ग पर चलने वाले लोगों का साथ। यह विचार आर्यसमाज विज्ञान नगर में आयोजित वैदिक सत्संग में सामने आए। कार्यक्रम में जिला प्रधान अर्जुनेदव चड्ढा, रामप्रसाद याज्ञिक, शोभाराम आर्य, आर्य समाज विज्ञाननगर के मंत्री राकेश चड्ढा व डॉ. के एल दिवाकर आदि उपस्थित थे।

दिल्ली। **धर्मपाल आर्य का प्रधान चुने जाने पर भावपूर्ण स्वागत**- आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने के बाद धर्मपाल आर्य का सभा भवन में वैदिक विद्वान ब्र. राजसिंह आर्य व अन्य उपस्थित आर्य महानुभावों ने भावपूर्ण स्वागत किया। धर्मपाल आर्य ने आभार जताया।

: विज्ञापन कॉलम :

इस कॉलम में अपने प्रतिष्ठान अथवा संस्थान के क्रियाकलापों तथा उपलब्धियों एवं जन्मदिन, वर्षगांठ तथा विभिन्न पर्वों पर शुभकामनाओं के प्रकाशन के लिए तुरंत सम्पर्क करें और अधिक से अधिक लाभ उठाएं। चलभाष- 09758833783, 09412139333

वैवाहिक विज्ञापन

यदि आपको योग्य वर या वधू की तलाश है..

तो फिर भला, देर किस बात की? आज ही देश-विदेश में बड़े पैमाने पर प्रसारित होने वाले आर्यावर्त केसरी के वैवाहिक कॉलम में अपना विज्ञापन भेजिए अथवा भिजवाइए और चुनिए एक सुयोग्य जीवन साथी। तो आइए! आज ही, अपना विज्ञापन बुक कराइए और पाइए रिश्ते-ही-रिश्ते....

न्यूनतम दो बार की विज्ञापन सहयोग राशि रु. 350/- तथा तीन बार की रु. 500/- निवेदित है।

-सम्पादक, आर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, उ.प्र. (चलभाष : 08273236003)

आज ही मंगाएं

आर्यावर्त प्रिंटर्स, अमरोहा

द्वारा मुद्रित तथा आर्य उपप्रतिनिधि सभा, अमरोहा द्वारा प्रकाशित बहुमूल्य व जीवनोपयोगी पुस्तकें आज ही मंगाएं

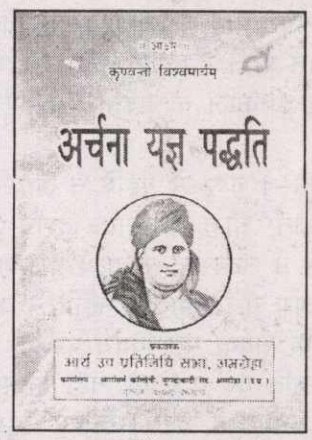

५६ पृष्ठ, रंगीन आवरण, उत्तम कागज युक्त पुस्तक

अर्चना यज्ञ पद्धति

मूल्य- 12 रु. (800 रु. सैंकड़ा)

अवश्य पढ़िए- आज ही मंगाईये संग्रहणीय पुस्तकें

◆ **रामायण का वास्तविक स्वरूप**

मूल्य- २०/-

◆ **यज्ञ और पर्यावरण**

मूल्य : 3 रु. (200 रु. सैंकड़ा)

समस्त पुस्तकें बिक्री हेतु निम्न पते पर उपलब्ध हैं

डॉ. अशोक कुमार आर्य
आर्यावर्त प्रकाशन
कार्यालय : आर्यावर्त कॉलोनी, निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा-244221 (उ०प्र०),
दूरभाष : 05922-262033
चलभाष- 09758833783, 09412139333

■ **हिन्दी के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज का योगदान**

अपने आर्यसमाज, स्कूल-कालेज के उत्सवों, विशेष पर्वों, विभिन्न समारोहों में वितरण करने हेतु आज ही मंगाएं।

मूल्य : दो सौ रु० सैंकड़ा

यज्ञ पद्धति

पृष्ठ 120, रंगीन आवरण, उत्तम कागज, आकर्षक कलेवर युक्त एक विशेष पुस्तक

आर्यपर्वों, जन्मदिन, वर्षगांठ, जयन्ती, उद्घाटन, विमोचन आदि के विशेष मंत्रों के साथ दैनिक व विशेष यज्ञ पर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रमाणित यज्ञ पद्धति पर आधारित एक श्रेष्ठ पुस्तक।

मूल्य : ३५ रुपये

thearyasamaj.org

नवजागरण का सूत्रपात

क्रान्ति ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं की सम्पूर्ण ग्रन्थ में अपने आत्मीय विचारों का निचोड़ दिया है और हजारों आर्ष ग्रन्थों का प्रमाण दिये हैं। प्रत्येक धर्मशील, कर्मशील, धर्मप्रचारक व आर्य को सत्यार्थ प्रकाश के पठन से पूर्व भूमिकाओं का अवश्य स्वाध्याय करना चाहिए।

महर्षि भूमिका में लिखते हैं, मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य–सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है, उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान पर सत्य का प्रकाश किया जाये, किन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहलाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिये विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें। जब विद्वान लोगों में सत्या–सत्य का निश्चय नहीं होता, तभी अविद्वानों को महाअन्धकार में पड़कर बहुत दुःख उठाना पड़ता है। इसलिए सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

. बहुत मनुष्य ऐसे हैं, जिनको अपने दोष तो नहीं दिखते, किन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्यत रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं क्योंकि प्रथम अपने दोष देख निकाल के पश्चात् दसरों के दोषा म दृष्टि देके निकाले।

सत्यार्थ प्रकाश की अनुभूमिका–1 व 2 में महर्षि ने आर्यावर्त में प्रचलित मत–मतान्तर तथा जैन, बौद्ध चारवाक दर्शन की विवेचना की है तथा अनुभूमिका–3 में उत्तरार्द्ध सत्यार्थ प्रकाश में इसाई मत विषयक पृष्ठभूमि के विषय में लिखा है। महर्षि ने कहा है कि सब मनुष्यों को उचित है कि सबके मत विषय पुस्तक को देखकर कुछ सम्मति व कुछ असम्मति देवें व लिखें, नहीं तो सुना करें। क्योंकि जैसे पढ़ने से पण्डित होता है, वैसे सुनने में बहुश्रुत होता है। यदि श्रोता दूसरे को नहीं समझा सके तथापित आप स्वयं तो समझ ही जाता है। जो कोई पक्षपात छोड़ या नारूढ़ होके देखते हैं, उनको न अपने और न पराये गुण–दोष विदित हो सकते हैं। मनुष्य का आत्मा यथा योग्य सत्या–सत्य के निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है। जितना अपना पठित व श्रुत है, उतना निश्चय कर सकता है। यदि एक मत वालों दूसरे मत के विषयों को जानें और न जाने तो यथावत संवाद नहीं हो सकता, किन्तु अज्ञानी किसी भ्रमरूप बाढ़े में गिर जाते हैं। यदि वादी प्रतिवादी सत्या–सत्य निश्चय के लिये वाद प्रतिवाद करे तो अवश्य निश्चय हो जाये।

इसी प्रकार अनुभूमिका–4 उत्तरार्द्ध सत्यार्थ प्रकाश में इस्लाम विषय की पृष्ठभूमि के विषय में भी स्वामी लिखते हैं कि सब मतों के विषय का थोड़ा–थोड़ा ज्ञान होने से इससे मनुष्यों को परस्पर विचार करने का समय मिले और एक दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत पर न इस मत पर झूठ–मूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है। किन्तु जो–जो भलाई है, वही भलाई और जो बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे। न कोई किसी का झूठ चला सके और न सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये फिर भी जिसकी इच्छा हो वह माने व न मानें। और यही सज्जनों की रीति है कि अपने व पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ, दुराग्रह न्यून करे करावें, क्योंकि पक्षपात से क्या–क्या अनर्थ जग में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षण भंग जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्यों को रखना मनुष्यपन से वहिः है।

यह मैने प्रयास करके सत्यार्थ प्रकाश की भूमिकाओं से कुछ अंश लिखे हैं, ताकि पाठकों को भूमिकाएं पढ़ने में रूचि बढ़ जायें और अनार्ष ग्रन्थों की सत्यता प्रतीत हो।

अतिथि सम्पादकीय–पं0 उम्मेद सिंह विशारद, देहरादून

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक महान राष्ट्रवादी

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

आचार्य उमाशंकर शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती के महान शिष्य, राष्ट्रवाद के प्रणेता, आर्य जाति के उन्नायक तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द उन अग्रणी अमर नायकों व महापुरुषों में से एक हैं जिनके प्रति आज सम्पूर्ण राष्ट्र नत मस्तक है।

नास्तिक मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद तक की जीवन यात्रा जन साधारण के लिए प्रेरणास्रोत का काम करती है। कोई भी उनके जीवन यात्रा से प्रेरणा लेकर वांछित ऊँचाई तक पहुँचने का उपक्रम स्वत: स्फूर्त्त होकर कर सकता है। एक कोतवाल का बेटा जो मांसाहारी, शराबी, जुआरी आदि दुर्व्यसनों में लिप्त नास्तिकता

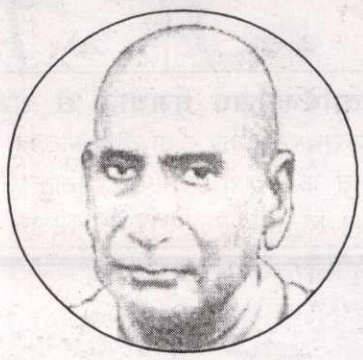

में गर्व करने वाला जब ऋषि दयानंद के सम्पर्क में महात्मा बन जाता है तो इस घटना से भावात्मक प्रतिक्रिया को प्राप्त हो जन सामान्य भी उस ऊँचाई को छूने का अवश्यमेव प्रयत्न कर सकता है। जब 19 वर्षीय मुंशीराम को वाराणसी में विश्वनाथ मंदिर के फाटक पर यह कहकर रोक दिया जाता है कि रीवा की महारानी दर्शन कर रही हैं युवा मुंशीराम के मन पर भीषण प्रतिक्रिया होती है।

मुंशीराम के पिता नानक चंद जब अपने नास्तिक पुत्र मुंशीराम के साथ बरेली पधारते हैं तो 1865 में स्वामी दयानंद का भी बरेली आगमन होता है। उनके व्याख्यान में हजारों की भीड़ होती है, नानक चंद स्वामी जी के व्याख्यान से अत्यंत प्रभावित हो अपने नास्तिक पुत्र मुंशीराम से उनके व्याख्यान में जाने का आग्रह करते हैं। पिता के आग्रह पर मुंशीराम व्याख्यान सुनने बेगमबाग की कोठी पर पहुंचते हैं। स्वामी दयानंद की भव्य मूर्ति देखकर पादरी कॉट और दो चार यूरोपियन को देखकर मुंशीराम के हृदय में श्रद्धा का बीज अंकुरित होने लगता है। व्याख्यान सुनने के पश्चात् मुंशीराम पर ऐसा जादू हुआ कि दोपहर को भोजन करते ही बेगमबाग में पहुंच जाते। 2:30 से 4:00 तक महर्षि दरबार लगता था जिसमें सबसे पहले नमस्ते करने वाले मुंशीराम ही हुआ करते थे। व्याख्यान के पश्चात् भी मुंशीराम तब तक वहां खड़े रहते, जब तक महर्षि चल न देते थे। महर्षि दयानंद के सत्संग से मुंशीराम कल्याणकारी मार्ग पर चल पड़े।

सन् 1884 माघ मास, रविवार के दिन सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम्

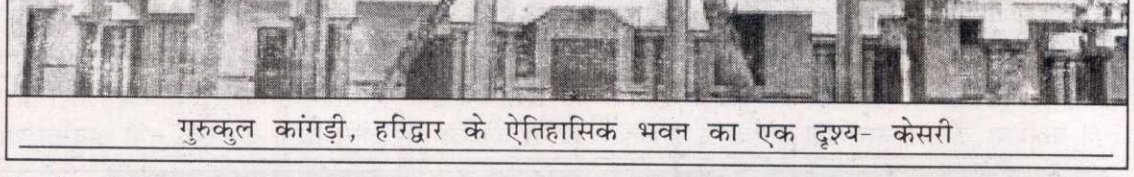

गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के ऐतिहासिक भवन का एक दृश्य- केसरी

सम्मुलास में पुनर्जन्म और कर्मफल के सिद्धान्त को पढ़कर वे आर्यसमाज के सदस्य बन गये। आर्यसमाज में प्रवेश के बाद उनका क्रांतिकारी विचार शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर सच्चे राष्ट्रभक्त तैयार करने के प्रति परिवर्तित हुआ। महात्मा मुंशीराम का विचार था कि 'जब तक भारतीय विद्यार्थी नवीन शिक्षा प्रणाली को छोड़कर पुरानी वैदिक आर्ष प्रणाली के पठन पाठन का अभ्यास नहीं करेंगे, तब तक भारतीय युवकों में जाग्रति नहीं आ सकती।' भारतीय नवयुवकों को अंग्रेजी शिक्षा के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए तथा उनमें देशभक्ति की भावना पैदा करने के लिए उन्होंने गंगा के तट पर 1902 ई0 में गुरुकुल की स्थापना की। वर्तमान में यही गुरुकुल, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। 10 अप्रैल 1917 के दिन संन्यास ग्रहण कर महात्मा मुंशीराम स्वामी श्रद्धानन्द बन गये।

1922 में भारतीय हिन्दू महासभा की स्थापना कर, आगरा तथा मलकाना में राजपूत आदि जो नवमुस्लिम थे, उन्हें शुद्ध किया। लगभग 2 लाख से अधिक मुसलमान शुद्ध किये गये। 30 मार्च 1919 को रॉलेट एक्ट के विरुद्ध दिल्ली में सार्वजनिक सभाएं हुई, जुलूस निकाला गया और गोरखों के संगीन के सामने अपनी छाती खोलकर निर्भयतापूर्वक स्वामी श्रद्धानन्द ने कहा कि "लो खड़ा हूं गोली मारो।" 4 नवम्बर 1919 के दिन दोपहर के बाद को नमाज के पीछे जामा मस्जिद में मुसलमानों का एक विशाल जलसा हो रहा था, उसमें मौलाना अब्दुल्ला चूड़ी वाले ने कहा कि "स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्याख्यान होना चाहिए। कुछ जोशीले नौजवान मुसलमान उठे, ओर तांगे पर स्वामी जी को नये बाजार से लिवा लाये। 'अल्लाह-हु-अकबर' नारे के साथ स्वामी जी मस्जिद की वेदी पर विराजमान हुए। शायद यह भारत ही नहीं, इस्लाम के इतिहास में भी पहला अवसर था, जब एक गैर मुस्लिम व्यक्ति ने जामा मस्जिद की वेदी पर व्याख्यान दिया। स्वामी जी ने ऋग्वेद के मंत्र से अपना व्याख्यान प्रारम्भ किया और 'ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः' के साथ समाप्त किया।

23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रसीद नामक एक युवक उनके पास गया और कहा कि "मैं आपसे कुछ धर्मचर्चा करना चाहता हूँ।" स्वामी जी ने कहा- "भाई मैं बीमार हूँ, ठीक हो जाने पर बातचीत करूंगा।" अब्दुल रसीद के पानी मांगने पर स्वामी जी ने अपने सेवक धर्मसिंह को पानी लाने को कहा। ज्यों हीं धर्मसिंह पानी लाने को बाहर गया, उस दुष्ट ने स्वामी जी पर तीन गोलियां चला दीं। धर्मसिंह ने सामना किया, उसे भी टांग में गोली मार दी। धर्मसिंह गिर गया। हत्यारा भागने को ही था कि स्वामी जी के दामाद डॉ0 धर्मपाल ने उसे पकड़ लिया। इन तीन गोलियों ने स्वामी जी को मौत की नींद सुला दिया। इस प्रकार आर्यजगत के हृदय-सम्राट स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान 23 दिसम्बर 1926 को सायं 4 बजे हो गया।

स्वामी श्रद्धानन्द के 87वें बलिदान दिवस पर हम स्वामी जी के अधूरे कार्यों को गति देकर, उन्हें पूरा करने का संकल्प लें।

thearyasamaj.org

वैदिक परंपरा एवं वैदिक धर्म के उत्कर्ष के लिए समर्पित स्वामी श्रद्धानंद

स्वामी श्रद्धानंद उर्फ लाला मुंशीरामने अपनी आयु के 35वें वर्ष में वानप्रस्थ आश्रम (मानव जीवन का तृतीय सोपान) कर वे महात्मा मुंशीराम बने। उन्होंने हरिद्वार के समीप कांगडी क्षेत्र में सन् 1902 में एक गुरुकुल की (पुरातन भारत की परंपरा के अनुसार एक निवासी शैक्षणिक संस्थान, जहां अध्यात्म के साथ-साथ शिक्षा के अन्य विषय भी पढाये जाते हैं।) स्थापना की। प्रारंभ मे उनके दो पुत्र हरिशचंद्र एवं इंद्र उनके विद्यार्थी तथा महात्मा स्वयं उनके आचार्य थे। वर्तमान में सैकडों विद्यार्थी वहां शिक्षा ले रहे हैं एवं गुरुकुल कांगडी अब एक विश्वविद्यालय है। महात्मा मुंशीराम गुरुकुल में लगातार 15 वर्षों तक कार्यरत रहे। तदुपरांत सन् 1917 मे उन्होंने सन्यास आश्रम (मानव जीवनके चार आश्रमों का अंतिम सोपान सर्वत्याग की अवस्था) स्वीकार किया। सन्यास आश्रम के स्वीकार समारोह में भाषण देते समय वे बोले, मैं स्वयं अपना नामकरण करूंगा। चुकी मैंने अपना संपूर्ण जीवन वैदिक एवं वैदिक धर्म के उत्कर्ष में व्यतीत किया है, तथा भविष्य में भी वही कार्य करूंगा, इसलिये मैं अपना नामकरण श्रद्धानंद कर रहा हूं

स्वामी श्रद्धानंदका स्वतंत्रता संग्राममें सक्रिय सहभाग!

राष्ट्र को स्वतंत्र करवाना स्वामी श्रद्धानंद का अमूल्य संकल्प था। भारतीय जनसमुदाय पर पजाब में 'मार्शल ला एवं 'रोलेट ऐक्ट' थोप दिये गये थे। दिल्ली में दमनकारी रोलेट ऐक्ट के विरोध में जनआक्रोश चरम पर था और आनंदोलन हो रहे थे। स्वामी श्रद्धानंद जनांदोलन की नेतृत्व कर रहे थे। उस समय जुलूस निकालने पर बंदी लगा दी गई थी। स्वामी जी ने बंदी को चुनौती देकर दिल्ली में जुलूस निकालने की घोषणा की। तदानुसार सहस्त्रों की संख्या में देशभक्त जुलूस में सहभागी हु। जब तक जुलूस चांदनी चौक में पहुंचता, गुरखा रेजिमेंट की टुकडी बंदूकों आदि के साथ अंग्रेजों के आदेश पर तैयार थी। साहसी श्रद्धानंद हजारों अनुयायियों के साथ सभा स्थल पर पहुंचे। जब सैनिक गोलियां चलाने वाले ही थे, कि वह निर्भय होकर आगे बडे और जोर से गर्जना करते हुए ललकारा कि, निरीह जनसमुदाय को मारने के पहले, मुझे मारो। बंदूकें त्वरित नीचे झुका दी गयीं तथा जुलूस

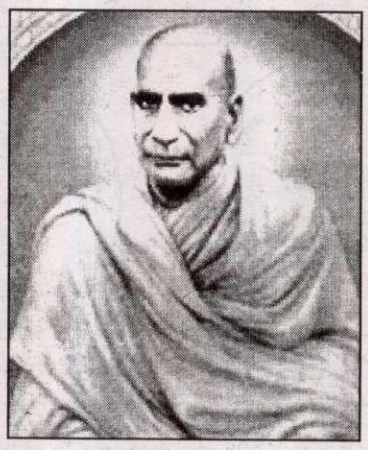

शांतिपूर्वक आगे बढ गया।

साहसी त्यागमुर्ति का दिल्ली की जामा मस्जिद में वैदिक मंत्रों के पठन से ओत प्रोत भाषण

सन् 1922 में स्वामी श्रद्धानंदने दिल्ली की जामा मस्जिद में एक भाषण दिया था। उन्होंने प्रारंभ में वेद मेंत्रों का पठन किया तदनंतर प्रेरणादायी भाषण दिया। स्वामी श्रद्धानंद ही मात्र एक ऐसे वक्ता थे, जिन्होंने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अपना भाषण दिया। जागतिक इतिहास का यह अभूतपूर्व क्षण था।

कांग्रेस छोडकर हिंदू महासभा में शामिल होना

स्वामी श्रद्धानंद ने जब परिस्थिति का गहराई से अध्ययन किया तो उन्हें इसका बोध हुआ कि मुसलमान कांग्रेस में शामिल होने पर भी मुसलमान ही रहता है । वे नमाज पढने के लिए कांग्रेस सत्र को भी रोक सकते थे। हिंदू धर्म पर कांग्रेस में अन्याय हो रहा था। जब उन्हें सत्य का पता लगा, उन्होंने त्वरित कांग्रेस का त्याग किया एवं पं. मदन मोहन मालवीय की सहायतासे 'हिंदू महासभा' की स्थापना की।

स्वामी श्रद्धानंद का धर्मांतरित हिंदुओं को स्वधर्म मे वापस लाने का महान कार्य

हिंदुओं के सापेक्ष मुसलमानों की बढती संख्या को रोकने के लिए, उन्होंने धर्मांतरित हिंदुओं के शुद्धिकरण का पवित्र अभियान प्रारंभ किया। उन्होंने आगरा में एक कार्यालय खोला। आगरा, भरतपूर, मथुरा आदि स्थानों मे अनेक राजपूत थे, जिन्हें उसी समय इस्लाम में धर्मांतरित किया गया था किन्तु वे हिंदू धर्म में वापस आना चाहते थे। पांच लाख राजपूत हिंदू धर्म स्वीकारने के लिए तैयार थे। स्वामी श्रद्धानंद इस अभियान का नेतृत्व कर रहे थे। उन्हों इस प्रयोजनार्थ एक बहुत बडी सभा का आयोजन किया एवं उन राजपूतों का शुद्धीकरण किया। उनके नेतृत्व में अनेक गांवों का शुद्धिकरण हुआ। इस अभियान ने हिंदुओं मे एक नवीन चेतना, शक्ति एवं उत्साह का निर्माण किया। इसके साथ ही हिंदु संस्थांओं का भी विस्तार हुआ। कराची निवासी एक मुसलमान महिला जिनका नाम अजगरी बेगम था, उन्हें हिंदू धर्म में समाहित किया गया। इस घटना ने मुसलमानों के बीच एक हंगामा खडा कर दिया एवं स्वामी जी विश्व में प्रसिद्ध हो गए।

प्राणहारी परंपरा के शिकार

अब्दुल रशीद नामक एक कट्टरपंथी मुसलमान स्वामी जी के दिल्ली स्थित निवास पर 23 दिसंबर को पंहुचा और उसने कहा कि, उसे स्वामी जी के साथ इस्लाम पर चर्चा करनी है। उसने अपने आपको एक कंबल से ढक रखा था। श्री धर्मपाल जो स्वामी जी की सेवामें थे, वे स्वामी जी के साथ थे, फलस्वरूप वह कुछ न कर सका। उसने एक प्याला पानी मांगा। उसे पानी देकर जब धर्मपाल प्याला लेकर अंदर गए, रशीद ने स्वामीजी पर गोली दाग दी। धर्मपाल ने रशीद को पकड लिया। जब तक अन्य लोग वहां पर पहुचते स्वामी जी प्राणार्पण कर चुके थे। रशीद के विरुद्ध कार्यवाही हुई। इस प्रकार स्वामी श्रद्धानंद जी इस्लाम की हत्यारी परंपरा के शिकार हुए किन्तु उन्होंने शहादत देकर अपना नाम अमर कर दिया। स्वामी श्रद्धानंद ने जैसे ही इस्लाम में धर्मांतरण का विरोध किया, गांधीजी एवं मुसलमानों की उनके प्रति रुचि समाप्त एवं कट्टरवादी द्वारा उनकी हत्या

गांधी जी स्वामी श्रद्धानंद को बहुत चाहते थे, किंतु जब से उन्होंने हिंदुओं का हिंदुत्वमें पुर्नपरिवर्तन करने का अभियान प्रारंभ किया, गांधी जी और मुसलमानों की उनमें रुचि समाप्त हो गई। इतना ही नहीं अब्दुल रशीद ने बंदूक से उनकी अति समीप से हत्या कर दी। स्वामी श्रद्धानंद के हत्यारे अब्दुल रशीद को, गांधीजी ने अति सन्मान से संबोधित करते हुए 'मेरा भाई!' कहा। इससे यह स्पष्ट होता है कि, यदि एक हिंदू भी किसी घटना में मारा जाता तो गांधी जी उसे राजनैतिक मुद्दा बना देते। स्वयं का संपूर्ण जीवन वैदिक परंपरा एवं वैदिक धर्म के उत्कर्ष के लिए समर्पित करने वाले तथा धर्मांतरित हिंदुओं को स्वधर्म मे वापस लाने वाले साहसी त्यागमुर्ति स्वामी श्रद्धानंदजी का महान कार्य आगे बढाना, यहीं उनके चरणों में यथार्थ रूप से श्रद्धांजली अर्पण करने जैसे होगी!

आदर्श सन्यासी स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

विवेक आर्य

स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन एक आदर्श सन्यासी के रूप में गुजरा। उनका परमेश्वर में अटूट विश्वास एवं दर्शन शास्त्रों के स्वाध्याय से उन्नत हुई तर्क शक्ति बड़ो बड़ो को उनका प्रशंसक बना लेती थी। संस्मरण उन दिनों का हैं जब स्वामी जी के मस्तिष्क में लापुर में गुरुकुल खोलने का प्रण हलचल मचा रहा था। एक दिन स्वामी जी हरिद्वार की गंगनहर के नारे खेत में बैठे हुए गाजर खा रहे थे। किसान अपने खेत से गाजर उखाड़कर, पानी से धोकर बड़े प्रेम से खिला रहा था। उसी समय एक आदमी वहां पर से घोड़े पर निकला। उसने स्वामी जी को जर खाते देखा तो यह अनुमान लगा लिया की यह बाबा भूखा हैं। उसने स्वामी जी से कहा बाबा जर खा रहे हो भूखे हो। आओ हमारे यहां आपको भरपेट भोजन मिलेगा। अब यह गाजर खाना बंद करो। स्वामी जी ने उसकी बातों को ध्यान से सुनकर पहचान कर कहा। तुम ही सीताराम हो, मैंने सब कुछ सुना हुआ हैं। तुम्हारे जैसे पतित आदमी के घर का भोजन खाने से तो जहर खाकर र जाना भी अच्छा हैं। जाओ मेरे सामने से चले जाओ। सीताराम दरोगा ने आज तक अपने जीवन में किसी से डांट नहीं सुनी थी। उसने तो अनेकों को दरोगा होने के कारण मारापीटा था। आज उसे मालूम चला की डांट फटकार का क्या असर होता हैं। अपने दर्द को मन में लिए दरोगा घर पहुंचा। धर्मपत्नी ने पूछा की उदास

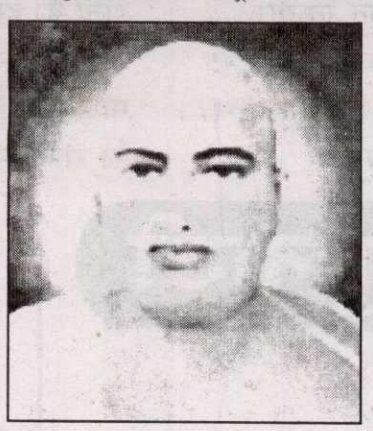

होने का क्या कारण हैं। दरोगा ने सब आपबीती कह सुनाई। पत्नी ने कहा स्वामी वह कोई साधारण सन्यासी नहीं अपितु भगवान हैं। चलो उन्हें अपने घर ले आये। दोनों जंगल में जाकर स्वामी जी से अनुनय-विनय कर उन्हें एक शर्त पर ले आये।

स्वामी जी को भोजन कराकर दोनों ने पूछा स्वामी जी अपना आदेश और सेवा बताने की कृपा करे। सीताराम की कोई संतान न थी और धन सम्पति के भंडार थे। स्वामी जी ने समय देखकर कहा की सन्यासी को भोजन खिलाकर दक्षिणा दी जाती हैं। सीताराम ने कहा स्वामी जी आप जो भी आदेश देंगे हम पूरा करेंगे। स्वामी जी ने कहा धन की तीन ही गति हैं। दान, भोग और नाश। इन तीनों गतियों में सबसे उत्तम दान ही हैं। मैं निर्धन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति के संस्कार देकर, सत्य विद्या पढ़ाकर विद्वान बनाना चाहता हूँ। इस पवित्र कार्य के लिए तुम्हारी समस्त भूमि जिसमें यह बंगला बना हुआ हैं। उसको दक्षिणा में लेना चाहता हूँ।

इस भूमि पर गुरुकुल स्थापित करके देश, विदेश के छात्रों को पढ़कर इस अविद्या, अन्धकार को मिटाना चाहता हूँ। स्वामी जी का संकल्प सुनकर सीताराम की धर्मपत्नी ने कहा। हे पतिदेव हमारे कोई संतान नहीं हैं और हम इस भूमि का करेंगे क्या। स्वामी जी को गुरुकुल के लिए भूमि चाहिए उन्हें भूमि दे दीजिये। इससे बढ़िया इस भूमि का उपयोग नहीं हो सकता। सिताराम ने अपनी समस्त भूमि, अपनी सम्पति गुरुकुल को दान दे दी और समस्त जीवन गुरुकुल की सेवा में लगाया। एक जितेन्द्रिय, त्यागी, तपस्वी सन्यासी ने कितनो के जीवन का इस प्रकार उद्धार किया होगा। इसका उत्तर इतिहास के गर्भ में हैं मगर यह प्रेरणादायक संस्मरण चिरकाल तक सत्य का प्रकाश करता रहेगा।

गो-प्रेमियों से विनम्र आग्रह

गुरुकुल आश्रम, आमसेना की गोशाला में किसी भयंकर बीमारी से कई गाय व बछड़े मर गये। पशु-डॉक्टर चिकित्सा करते रहे, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। 3 घण्टे के अन्दर ही अच्छा दूध देने वाली ये 12 गायें काल के ग्रास में चली गयीं। इससे दूध की आय भी समाप्त हो गयी। लगभग 50 हजार रुपये इन गायों के चिकित्सा पर खर्च हुआ, इस प्रकार अचानक ही गुरुकुल पर यह वज्रपात हुआ। गुरुकुल की गौशाला गायों से खाली हो गयी। अत: गुरुकुल एवं गौप्रेमी सज्जनों से विनम्र आग्रह है कि इस आपत्तिकाल में गुरुकुल परिवार को सहयोग करें तथा गाय खरीदने में आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। आर्थिक सहयोग SBI खरियार रोड के गुरुकुल को दिये गये दान पर F,C,R,A,35Ac एवं 80G आयकर की छूट है।

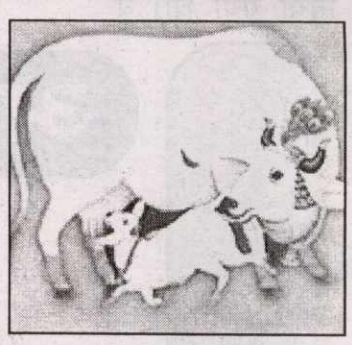

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

संचालक- गुरुकुल आश्रम, आमसेना (ओड़िसा)

फोन : 09437070615, 09937690889, 09238768031

thearyasamaj.org

देश का चौथा राज्य- गुजरात

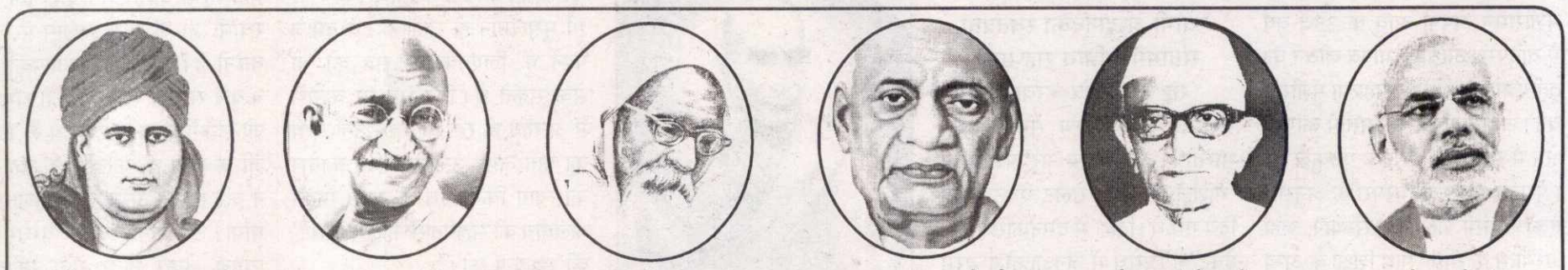

महर्षि दयानन्द सरस्वती | महात्मा गांधी | आ. विनोबा भावे | सरदार वल्लभभाई पटेल | मोरारजी देसाई | नरेन्द्र मोदी

(१) १-५-१९६० को मुम्बई प्रान्त को विभाजित करके गुजरात राज्य बनाया गया।

(२) मुम्बई महानगर में गुजरातियों की संख्या बहुत अच्छी थी। वहां का व्यापार गुजरातियों के द्वारा संचालित होता था। अतः यह मांग की गयी कि मुम्बई को गुजरात में शामिल किया जाए, किंतु यह संभव नहीं था।

(३) फिर यह मांग उठी कि मुम्बई को केन्द्र शासित क्षेत्र बनाया जाए। बाद में मुम्बई को महाराष्ट्र की राजधानी बना दिया गया।

(४) मई को जब मुम्बई में महाराष्ट्र स्थापना दिवस मनाया जाता है, तब वहां रहने वाले गुजराती इस दिवस को नहीं मनाते हैं, तो महाराष्ट्र वालों को अच्छा नहीं लगता है।

(५) गुजरात की राजधानी का नाम गांधीनगर है, जो अहमदाबाद के निकट है। यह नया शहर है, जो राजधानी के लिए बनाया गया है।

(६) **संघ परिवार गांधीनगर में गांधी मन्दिर बनवा रहा है। यह देश का प्रथम गांधी मन्दिर होगा। क्या गांधी जी भगवान के अवतार थे? क्या राम, कृष्ण, शिव, हनुमान, लक्ष्मी, सरस्वती आदि देव-देवताओं की तरह गांधी जी की पूजा करना उचित या सही है?**

(७) गुजरात में २००२ में ५८ रामभक्तों को रेल में जिन्दा जला दिया गया था। ये अयोध्या से लौट रहे थे। उसकी भयंकर प्रतिक्रिया हुई, जिसमें सैकड़ों मुस्लिमों को अपनी जान गंवानी पड़ी।

(८) उस समय श्री नरेन्द्र मोदी मुख्यमंत्री थे। प्रतिक्रिया करने से मोदी लौह-पुरुष सिद्ध हुए और वे कठोर शासक के रूप में पूरे देश में प्रसिद्ध हुए।

(९) अहमदाबाद का प्राचीन नाम कर्णावती था। हम मांग करते हैं कि इस नगर का पुराना नाम पुनः रखा जाए।

(१०) गुजरात विधान सभा में १८२ विधायक चुने जाते हैं। हम मोदी जी की प्रशंसा करते हैं कि उन्होंने एक मुस्लिम को भी पार्टी का टिकट नहीं दिया, फिर भी वे प्रचण्ड बहुमत से विजयी हुए और उनकी लोकप्रियता बढ़ी। विधान सभा में वीर सावरकर का फोटो लगा हुआ है।

(११) कहा जाता है कि डर-भय आदि के कारण मुस्लिमों ने मोदी की पार्टी को वोट दी।

(१२) मोदी जी के साहस की प्रशंसा की जाती है कि उन्होंने इस्लामी टोपी पहनने से मना कर दिया, और अब प्रधानमंत्री बनने पर ईद-उल-फितर से पहले इफ्तार की दावत नहीं दी। उन्होंने कांग्रेस की तुष्टिकरण की परम्परा को तोड़कर आदर्श प्रस्तुत किया।

(१३) सूरत शहर साड़ियों का बहुत बड़ा व्यापारिक केन्द्र है। यह भी कहा जाता है कि सूरत देश का सबसे ज्यादा गन्दा शहर है।

(१४) आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द राजकोट जिले के टंकारा नाम के कस्बे में २४ फरवरी १८२४ ई० को जन्मे थे।

(१५) अब टंकारा में उपदेशक महाविद्यालय चल रहा है। इसमें लगभग 200 छात्रा उपदेशक-पुरोहित बनने की शिक्षा ग्रहण करते हैं। एक गोशाला और कई भव्य क्वार्टर बन चुके हैं।

(१६) महाशिवरात्रि/ ऋषि बोधोत्सव पर्व पर फरवरी-मार्च में प्रतिवर्ष तीन दिन का उत्सव धूमधाम से मनाया जाता है।

(१७) हम मांग करते हैं कि गुजरात में दयानन्द जयन्ती पर सार्वजनिक अवकाश आरम्भ किया जाए।

(१८) धन्य है गुजरात की धरती, जहां महर्षि दयानन्द, लौहपुरुष सरदार पटेल, बिनोवा भावे, मोरारजी देसाई, नरेन्द्र मोदी, डॉ० तोगड़िया जैसे नेता जन्मे हैं।

(१९) सरदार पटेल ने जूनागढ़ के नवाब से सख्ती करके उस रियासत का विलय भारत में कराया। तत्पश्चात् नेहरू, मौलाना आजाद, गांधी जी आदि के विरोधी की परवाह न करते हुए सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण कराया।

(२०) जामनगर में श्री गीता विश्वविद्यालय चल रहा है, जहां गीता की पढ़ाई विस्तार से होती है। इस विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार के द्वारा भी गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी के माध्यम से गीता पढ़ाकर परीक्षा ली जाती है। राज्य में कुल ५२ विश्वविद्यालय हैं।

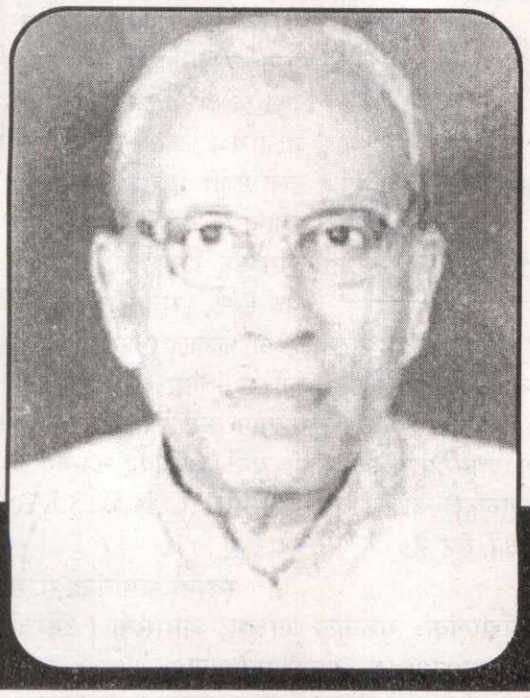

आई०डी० गुलाटी

(संस्थापक)

शैलेन्द्र जौहरी, एडवोकेट

अतिरिक्त अध्यक्ष (द्वितीय)

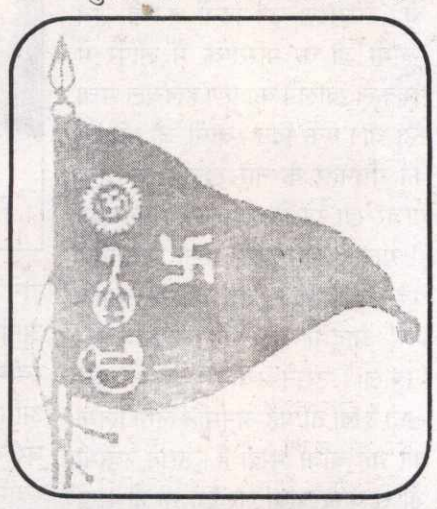

सावरकरवाद प्रचार सभा

बुलन्दशहर (उ०प्र०)- 203001 मो. : 8958778443

Adv.

पुस्तक समीक्षा

भारतीय संस्कृति के पुरोधा- आचार्य पं० हरिसिंह त्यागी

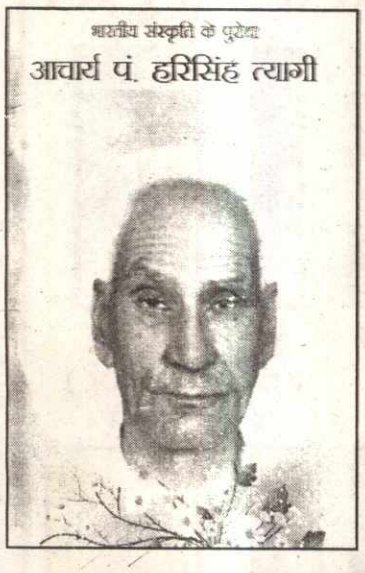

गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर, हरिद्वार में हिन्दी के प्राध्यापक डॉ0 सुशील कुमार त्यागी द्वारा वेद एवं संस्कृत भाषा के अप्रतिम विद्वान, गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के प्रबिल समर्थक भारतीय संस्कृति के पुरोधा तथा वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य पं0 हरिसिंह त्यागी, जो गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में प्राचार्य सहित अनेक गरिमामय पदों को विभूषित करते रहे, के जीवनवृत्त पर सम्पादित पुस्तक **'भारतीय संस्कृति के पुरोधा- आचार्य पं० हरिसिंह त्यागी'** परिलेख प्रकाशन नजीबाबाद द्वारा प्रकाशित एक उत्कृष्ट अभिनन्दन ग्रन्थ है, जिसमें विद्वान सम्पादक ने श्री आचार्य जी के व्यक्तित्व व कृतित्व से परिचय कराने का सराहनीय प्रयास किया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पांच अध्यायों में क्रमश: आचार्य श्री' हरिसिंह त्यागी जी के आदर्श व्यक्तित्व, आचार्य जी द्वारा संस्कृत में लिखित आलेख 'संस्कृत ज्ञान गंगा', हिन्दी लेख 'हिन्दी ज्ञान गंगा', आचार्य जी द्वारा विरचित काव्य रचनाएं 'हिन्दी काव्य-प्रवाह' तथा उनकी 'आत्मकथा' का जिस प्रकार समावेश हुआ है, उससे यह ग्रन्थ और भी अनूठा हो गया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में शुभकामना संदेशों से भी आचार्य श्री' के व्यक्तित्व एवं कृतित्वों के बहुआयामों पर प्रकाश पड़ता है। पुस्तक के अन्त में चित्रवीथिका की प्रस्तुति से इसकी उपादेयता और भी अधिक हो गयी है। निश्चय ही यह ग्रन्थ सामग्री, प्रस्तुतिकरण, विषय-वर्गीकरण, भाषा, लिपि, प्रवाह व मुद्रण आदि सभी दृष्टियों से संग्रहणीय, पठनीय तथा उल्लेखनीय है। वस्तुत: यह ग्रन्थ आने वाली सन्ततियों के लिए प्रेरक सिद्ध होगा। इस साधना व सत्प्रयास के लिए डॉ0 सुशील जी कोटिश: बधाई के पात्र हैं।

पुस्तक का नाम- 'भारतीय संस्कृति के पुरोधा- आचार्य पं0 हरिसिंह त्यागी'

सम्पादक-डॉ0 सुशील कुमार त्यागी

प्रकाशक- परिलेख प्रकाशन, बालिया मार्केट, निकट- साहू जेन पी0जी0 कालेज, नजीबाबाद (बिजनौर), मोबा0 9897742814, 98371120022

कुल पृष्ठ- 410

मूल्य- 500/-रु0

अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ

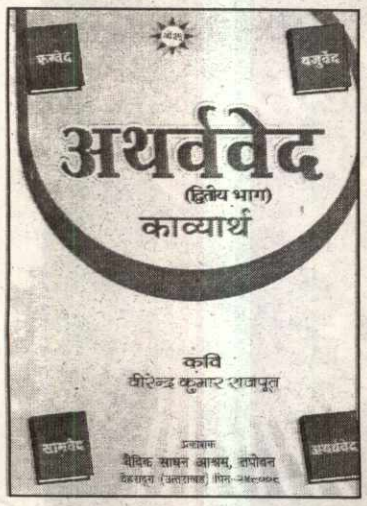

कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत द्वारा विरचित तथा वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून) द्वारा प्रकाशित **'अथर्ववेद (द्वितीय भाग)'** का **'काव्यार्थ'** कवि की पावन साधना है। वास्तव में अपौरुषेय ग्रन्थ व ज्ञान के अक्षय कोष वेद जैसे महानतम ग्रन्थों को कवि ने जिस प्रकार काव्यार्थ के लिए चुना है, उसके लिए वह बधाई के पात्र हैं। अथर्ववेद (द्वितीय भाग) की हिन्दी पद्य रचना भी उनका एक सफल प्रयास है।

निश्चय ही परमात्मा प्रदत्त चारों वेदों का अर्थ सरल एवं सुललित काव्य में करने का शिव संकल्प सराहनीय है। इस काव्यार्थ में कवि ने अपने सुमधुर, सरस व सहज कवित्तों, सवैयों, तथा दोहों आदि हिन्दी के प्रचलित छन्दों के सांचे में मंत्रों के भावार्थ को जिस प्रकार ढालने का अनूठा प्रयास किया है, उससे इस काव्यार्थ की महिमा और भी अधिक बढ़ गयी है। इस भौतिकवादी युग में यह आध्यात्मिक साधना निश्चय ही अनुकरणीय व स्तुत्य है। वस्तुत: यह काव्यार्थ प्रस्तुतिकरण, भाषा, लिपि, प्रवाह, मुद्रण व कलेवर आदि विभिन्न दृष्टियों से संग्रहणीय, उपादेयी व पठनीय है।

पुस्तक का नाम- अथर्ववेद (द्वितीय भाग) काव्यार्थ

रचयिता- कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत, पता- 8, वसन्त कुंज, 369/1, वसन्त विहार, फेज-1, देहरादून (उत्तराखण्ड)-248006, मोबा0 : 09412635693

प्रकाशक- वैदिक साधन आश्रम, तपोवन (देहरादून), **कुल पृष्ठ**- 504

मूल्य- 200/-रु0, **प्राप्ति स्थल**- पं0 वेदवसु शास्त्री,आर्यसमाज जक्ष्मण चौक, देहरादून, मोबा. : 09897027872

माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार प्रस्ताव (आवेदन) आमंत्रित हैं

न्यास प्रतिवर्ष महात्मा आर्यभिक्षु (स्वामी आत्मबोध सरस्वती) के दीक्षा दिवस (जन्म दिवस) पर आर्य विद्वानों को सम्मानित करता है। इस वर्ष भी 31 जनवरी 2015 को सम्मानित किये जाने वाले वैदिक विद्वानों एवं कार्यकर्ताओं के चयन हेतु हिन्दी में निम्न प्रकार प्रस्ताव आमंत्रित हैं-

1. स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड आर्यभिक्षु पुरस्कार (आर्य विद्वान के लिए)
2. ब्र. अखिलानन्द आर्यभिक्षु पुरस्कार (नैष्ठिक ब्रह्मचारी के लिए)
3. स्वामी आत्मबोध सरस्वती कर्मवीर पुरस्कार (श्रेष्ठ आर्य कार्यकर्ता के लिए)

प्रथम व द्वितीय पुरस्कार सामान्य: उन विद्वानों, ब्रह्मचारियों को प्रदान किये जाते हैं जिनकी कोई निश्चित आय नहीं होती। तृतीय पुरस्कार के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है। प्रत्येक पुरस्कार राशि रुपये 11,000/- (ग्यारह हजार मात्र) हैं। 31 दिसम्बर 2014 तक प्रस्ताव (आवेदन) प्रधान अथवा मंत्री, न्यास के नाम से, सम्पूर्ण विवरण सहित भेजने का कष्ट करें। **देवराज आर्य, मंत्री (09997070789)**

काव्य जगत

'देवातिथि'

देवनारायण भारद्वाज की दो कविताएं

मंत्रगीत

राष्ट्र-संवर्धन

प्रिय राज्य प्रशासन के नायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।
हो कहीं अस्त अन्याय नहीं।
कोई अनाथ असहाय नहीं।
यम क्षमता श्रम की सराहना,
हो प्रजा कृपण कृशकाय नहीं।
सर्व शत्रुओं का भयदायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।1।।
भूमि उर्वरा गोवर्धन हों।
शक्ति संतुलन अश्वचरण हों।
हों अभय विहारी नर-नारी,
संगठन श्रेय संकर्षण हो।
संकल्प समुच्चय फलदायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।2।।
यश शक्ति सन्तुलन कितना हो।
वैदिक राजाओं जितना हो।
अखिल विश्व संरक्षण पाये,
प्रिय तुम में तप बल इतना हो।
हो विश्व तुम्हारा गुणगायक।
हो प्रजा अभ्युदय उन्नायक।।3।।

स्रोत-
गोमदु षुणासत्या
श्वावद्यातमश्विना।
वर्ती रुद्रानृपाव्यम्।।
(यजु0- 20-81)

राष्ट्र की बाह्यान्तर सुरक्षा

हे जनगणमन शासक बृषान।
हो सावधान! हो सावधान।।
सम्पूर्ण प्रजा आरक्ष आप।
पुरुषार्थ पोषणा दक्ष आप।
बाहर भीतर के सकल शत्रु,
सुन शबद आपके जायं कांप।
पा जाएं नागरिक परित्राण।
हो सावधान! हो सावधान।।1।।
तेरी सर्वोदय शिक्षा में।
सेनापति की संरक्षा में।
सर्वत्र समुन्नति सम्मति हो,
सद्स्नेह और सद् इच्छा में।
रख स्नेह सन्तुलन स्वाभिमान।
हो सावधान! हो सावधान।।2।।
जो दुराचार दुष्कर्मी हों।
द्रोही लोभी भयधर्मी हों।
बाहर के अथवा भीतर के,
जो शत्रु सभी हठधर्मी हों।
दो उन पर अपना बाण तान।
हो सावधान! हो सावधान।।3।।

स्रोत-
न यत्परो नान्तरऽआदधर्षद
वृषणवसू। दु: श ॅ सो मर्त्यो
रिपु:।।
(यजु0- 20-82)

'वरेण्यं' अवन्तिका (प्रथम)
राजघाट मार्ग, अलीगढ़

अथर्व रस रंग

वीरेन्द्र कुमार राजपूत

मंत्र- अमित्यं देवं सवितारमोण्यो: कवितुम।
अर्चामि सित्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्।। 7.14.1

कवित्त

सूर्य, पृथिवी के जो जनक हैं, महान ज्ञानी,
सतत ही कर्मशील, सत्य को जो प्रेरते;
सबके ही प्यारे, रमणीयता को धारे जो हैं,
जिनके सभी हैं ध्याता, जब जन टेरते।
अति ही महान जो हैं सर्वशक्तिमान, सदा-
सत्कर्मियों के कष्ट शीघ्र ही अहेरते;
वो हैं प्रभु देव सुखदाता, मैं तो उनकी ही-
ओ3म् नाम माला नि रहता हूं फेरते।।

८-बसन्त कुंज, ३६९/१, वसन्त विहार
फेज-१, देहरादून, फोन : ९४१२६३५६९३

आर्यावर्त केसरी

मुकेश कुमार

आर्यावर्त केसरी एक आन्दोलन है।
जला दीप भारतीय प्राचीन संस्कृति का,
इसे हर घर में पहुंचाना है।।
जिसने पढ़ लिया इसे, आगे बढ़ना सीख लिया,
अपने राष्ट्र की खातिर मरना भी उसने सीख लिया।
ये घर-घर में अलख जगाता है,
ऊंची भारत मां की शान करके दिखाता है।
देश में ही नहीं..
विदेशों में भी आर्यवंश को सम्मान दिलाता है।।
आर्यावर्त केसरी एक आन्दोलन है।
नए ज्ञान-विज्ञान लोक में,
इसको अपना गेरुआ (भगवा) ध्वज फहराना है।।
एक रहे हम, नेक रहें हम, का बीज बोता है,
सीधी-सच्ची रीति अपनाता है।
थोड़े ही शब्दों में बहुत कुछ कह जाता है।।

-ग्रा०- रिहावली, फतेहाबाद (आगरा) उ०प्र०
मो० : 09627912535

महान भारत

मोहनलाल मगो

मेरा भारत महान।
सरकारों के न आंखें न कान।
नागरिक का पग पग पर अपमान।
वोट हथिया कहे स्वयं को हिरण्यकशिपु जैसा भगवान
कौन टिका है कौन टिकेगा, जिसको कैसे जैसे अभिमान
सरकार अपना जीवन अमर बनाने को
टैक्स दाम बढ़ा कर मतदाता को करे परेशान।
मतदाता कर रूपी दधीचि हड्डियां दे हो रहा हैरान।
सरकार को जिन्दा रहने का अधिकार किया किसने प्रदान
जो कोई बलशाली दैत्य योद्धा हिला न पाया
अब तो तोड़ रहे वोट के भिखारी
सड़कछाप नेता सीना तान।
त्रेता में आये थे सुनिश्चित करने को,
द्विज, धरती का हो न अपमान।
अब तो करदाता ऋषियों के खून से भर रहे मटके
जिनको मारा राम ने उनकी सन्तान
अब श्रीराम हाथों में ले लो वही धनुषबाण
बना दो अपना भारत महान, यथार्थ में मेरा भारत महान
झूठी न हो भावना हम बनें सत्यवादी कलियुगी इन्सान
फिर कहें मेरा भारत महान
हो मेरा भारत महान।।

नई दिल्ली

thearyasamaj.org

आगामी कार्यक्रम

- केआयुप के द्वारा अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन व २५१ कुंडीय विराट यज्ञ, कमल पार्क, सफदरजंग एन्कलेव, नई दिल्ली में २४ से २६ जनवरी २०१५ तक। सम्पर्क- 09868661680
- गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार तथा महर्षि सांदीपनि, राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा 'वैश्विक ज्ञान-विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में वेदों की प्रासंगिकता' त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठी १३ से १५ मार्च २०१५ तक। -प्रो. दिनेशचन्द्र शास्त्री, संयोजक, मोबा. : 09410192541
- परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा योग साधना शिविर १४ से २१ जून २०१५ तक। सम्पर्क- 0145-2460164
- महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम सेना, खरियार रोड, नुआपड़ा (ओड़िसा) का ४८वां वार्षिकोत्सव ७, ८, ९ फरवरी २०१५ को। -स्वामी वृतानन्द सरस्वती, आचार्य, मोबा.: 9437070541
- गुरुकुल प्रभात आश्रम, टीकरी, भोला, मेरठ द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी मकर सौर संक्रांति १४ जनवरी २०१४ को। सम्पर्क- 9758747920

संक्षिप्त समाचार

- आर्यसमाज एटा का १२९वां वार्षिक महोत्सव २६, २७, २८ नवम्बर २०१४ को धूमधाम से सम्पन्न। (डॉ. सुरेश चन्द्र शास्त्री, मंत्री)
- आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार, लुधियाना द्वारा वेद प्रचार सप्ताह एवं तेजपाल साथी का बलिदान दिवस समारोह पूर्वक आयोजित। (देवपाल आर्य)
- आर्यसमाज, मेन बाजार, फरीदकोट का वार्षिक महोत्सव २८ से ३० नवम्बर २०१४ तक समारोह पूर्वक विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ आयोजित। (सतीश कुमार आर्य, मंत्री)
- ओ३म साधना मण्डल द्वारा करनाल में स्वामी दयानन्द विदेह का जन्म दिवस समारोह १६ नवम्बर २०१४ को धूमधाम से सम्पन्न। (ब्रजमोहन भाटिया, मंत्री)
- आर्यसमाज, रामनगर रुढ़की का ३८वां वार्षिकोत्सव ७, ८, ९ नवम्बर २०१४ को भव्यतापूर्वक समायोजित। (रामेश्वर प्रसाद सैनी, मंत्री)
- महात्मा चैतन्यमुनि द्वारा जम्मू कश्मीर में १४ से २१ सितम्बर तक निशुल्क योग साधना शिविर का भव्य आयोजन। (भारतभूषण आनंद, प्रधान)
- बुलंदशहर के लीला नगला पहासू में गुरुकुल बरनावा के आचार्य अरविन्द शास्त्री द्वारा १३ से १५ अक्टूबर तक विश्व कल्याण महायज्ञ आयोजित। (सुमन कुमार वैदिक)
- आचार्य विजयपाल द्वारा बड़ौत में निशुल्क विशाल प्राकृतिक चिकित्सा शिविर ११ से २७ नवम्बर २०१४ तक सम्पन्न। (सुमन कुमार वैदिक)
- गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, नवापारा (ओड़िसा) द्वारा २ से ७ अक्टूबर २०१४ तक युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न। २०० आर्य वीरों ने लिया प्रशिक्षण। (डॉ. कुंजदेव मनीषी, संचालक)
- आर्यसमाज, देवनगर, नई दिल्ली में ६ से ९ नवम्बर २०१४ तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन। आचार्य हरिदेव शास्त्री ने कराया यज्ञ। (नफे सिंह देसवाल, प्रधान)
- प्रज्ञा भारती विद्यालय, नायक गोठ, टनकपुर, चम्पावत (उ. ख.) द्वारा १९ नवम्बर २०१४ को मनाया गया वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई का जन्म दिवस। चरित्र से प्रेरणा का संकल्प। (दिनेश शास्त्री, अध्यक्ष)

आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा द्वारा स्थापित
सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशन निधि के सहयोगी महानुभाव

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
टंकारा (गुजरात)
१०००/- रुपये

स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती
ब्रजघाट (उ.प्र.)
१५००/- रुपये

प्रो. आर.डी. चतुर्वेदी
गोरखपुर (उ.प्र.)
१०००/- रुपये

हरपाल सिंह आर्य
पोटा- अमरोहा (उ.प्र.)
१०००/- रुपये

डॉ. सत्येन्द्र कुमार
बीसलपुर, पीलीभी (उ.प्र.)
१००१/- रुपये

राधा वल्लभ राठोर
कोटा (राजस्थान)
१०००/- रुपये

डॉ. चन्द्रभान सिंह
साहनपुर, बिजनौर (उ.प्र.)
१०००/- रुपये

: विशेष :
प्रकाशन निधि में न्यूनतम एक हजार रुपये भेंट करने वाले महानुभावों के रंगीन चित्र 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्यावर्त केसरी में प्रकाशित किये जाएंगे।

घर-घर पहुंचाएं सत्यार्थ प्रकाश
धनराशि अग्रिम भेजना आवश्यक नहीं है, यदि आप चाहें तो यह राशि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद भी हमें भेज सकते हैं। आपकी घोषित धनराशि के अनुरूप उतनी ही प्रतियों में आपके चित्र व नाम प्रकाशित किये जाएंगे। धन्यवाद

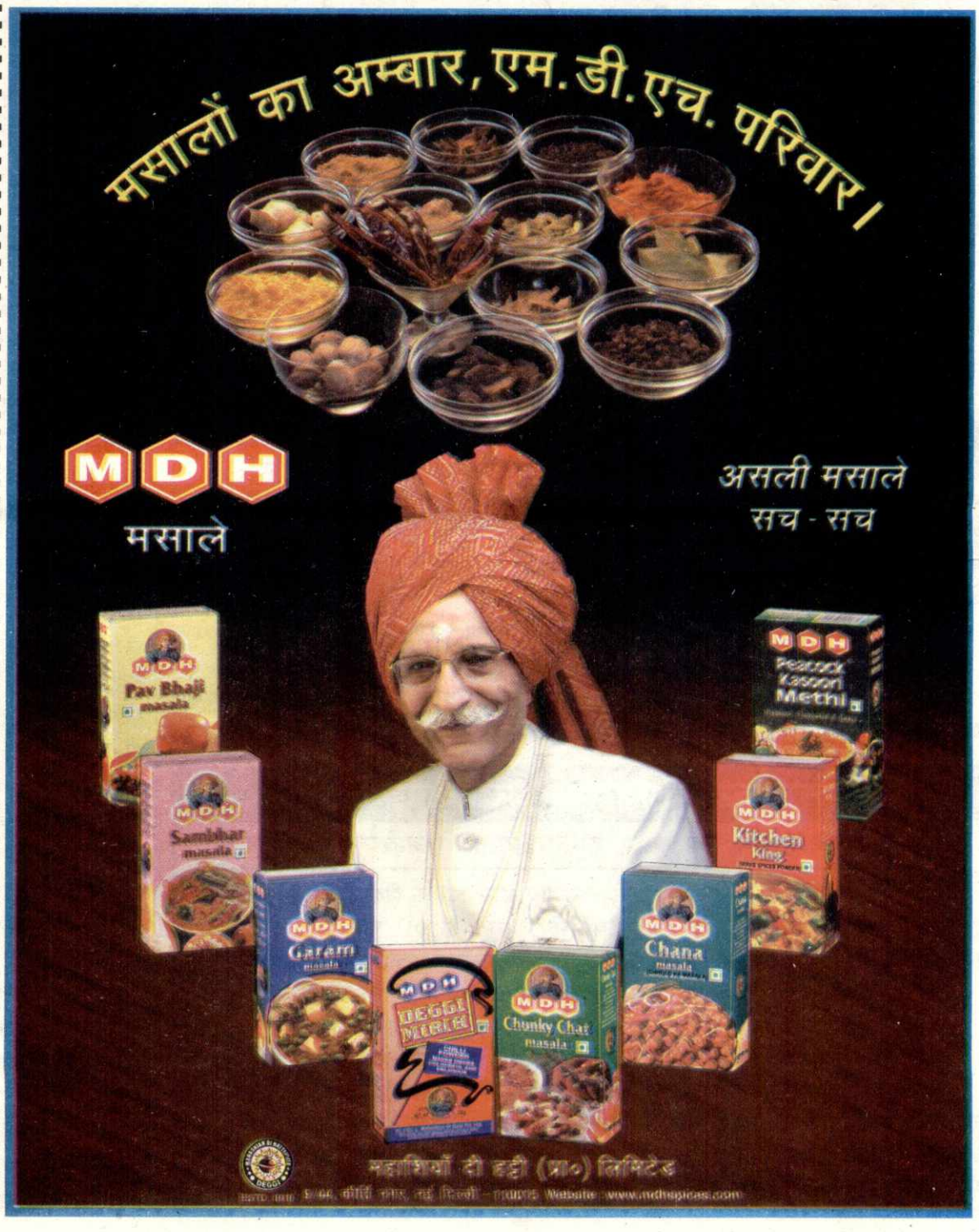

आर्यावर्त केसरी

संरक्षक
श्रीराम गुप्ता
प्रबन्ध सम्पादक- सुमन कुमार 'वैदिक',
विनय प्रकाश आर्य, शिव कुमार आर्य
सह सम्पादक- पं. चन्द्रपाल 'यात्री'
समाचार सम्पादक- सत्यपाल मिश्र,
यतीन्द्र विद्यालंकार, रवित विश्नोई,
डॉ. ब्रजेश चौहान
मुद्रण- फरमूद सिद्दीकी,
इशरत अली
साहित्य सम्पादक- डॉ. बीना रुस्तगी
प्रधान सम्पादक
डॉ. अशोक कुमार आर्य

डॉ. अशोक कुमार आर्य-प्रकाशक, मुद्रक, व स्वामी द्वारा स्टार प्रिंटिंग प्रेस के लिए आर्यावर्त प्रिन्टर्स, अमरोहा से मुद्रित व कार्यालय-

आर्यावर्त केसरी

मुरादाबादी गेट, अमरोहा
उ.प्र. (भारत) -२४४२२१
से प्रकाशित एवम् प्रसारित।
☎:05922-262033,
9412139333 फैक्स : 262665
डॉ. अशोक कुमार आर्य
प्रधान सम्पादक
E-mai :
aryawart_kesari@rediffmail.com
aryawartkesari@gmail.com